International Journal of Advanced Research in Arts, Science, Engineering & Management (IJARASEM)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

भारतीय संस्कृति का प्राण तत्व संस्कृत की वर्तमान प्रासंगिकता एवं उपयोगिता

रामकेश आदिवासी

सह-आचार्य, संस्कृत, राजकीय महाविद्यालय, गंगापुर सिटी, राजस्थान

सार

संस्कृत ही वर्तमान में अग्रसर क्यों है. इस पर गम्भीरता से विचार करना परमावश्यक है। किसी भी समाज को विकसित एवं समुन्नत करने में विभिन्न संसाधनों की आवश्यकता होती है परन्तु सभी संसाधनों की सुसम्पन्नता के साथ उस समाज में विचारों के आदान प्रदान करने का साधन जिसे भाषा कहते हैं उसका अत्यन्त महत्व होता है।

परिचय

संस्कृत भारतीय भाषाओं का जीवन शक्ति स्त्रोत है। प्राचीन काल में भारत ज्ञान-विज्ञान के क्षेत्र में विश्व गुरू था। यवनों तथा अंग्रेजों ने भारतीयों की शान्तिप्रियता के कारण भारत को गुलाम बनाकर इसका सर्वस्व नष्ट करने का यत्न किया। उन्होंने स्वार्थ सिद्धि के लिए संस्कृत के स्थान पर उर्दू और अंग्रेजी को बढ़ावा दिया और इससे भारत का पतन हो गया। एक समय ऐसा रहा कि भारत गुलाम हो गया। लेकिन भारत की संस्कृति ऐसी थी कि न जाने अनेकों शहीदों, समाज सुधारकों ने भारत में जागृति पैदा की और भारत माँ को गुलामी की जंजीरों से आजाद करवाया। आज उसी का दुष्परिणाम है कि महिला अपराध, भ्रष्टाचार और आतंकवाद बेरोजगारी ये समस्याएँ प्रमुख रूप से समाज को व्यथित कर रही हैं आज नैतिक शिक्षा संस्कृत शिक्षा के अभाव में ही हमारा भारतीय समाज अपनी आध्यात्मिक अवधारणा को धीरे-धीरे त्यागता जा रहा है और भौतिकवाद की ओर तेजी से अग्रसर हो रहा है।[6,7]

'विश्व संस्कृत दिवस' वाक्यांश वैश्विक स्तर पर व्यापक अर्थ रखने वाली, पूरी दुनिया में सर्वव्यापी, संस्कृत के अर्थ को स्पष्ट करता है, जो भारतीय उपमहाद्वीप की भाषाओं में से एक होने की पहचान से परे है। इस प्रकार, संस्कृत भाषा के चारों ओर मौजूद कथा का पता लगाना, अतीत और वर्तमान से इसके विभिन्न मार्गों और विकास का विश्लेषण करना और इसकी समकालीन प्रासंगिकता की कल्पना करना महत्वपूर्ण है।

संस्कृत दक्षिण एशिया की इंडो-यूरोपीय भाषाओं के सैटम समूह से संबंधित है। एक प्राचीन शास्त्रीय भाषा होने के अलावा, यह मुख्य रूप से हिंदू धर्म और बौद्ध धर्म की एक धार्मिक भाषा भी है, और कभी-कभी जैन धर्म में भी इसका उपयोग किया जाता है। यह भारत की बाईस आधिकारिक भाषाओं में से एक है और आधुनिक इंडो-आर्यन भाषाओं की पूर्वज है। दक्षिण और दक्षिण पूर्व एशिया की संस्कृतियों में इसकी स्थिति यूरोप में लैटिन और ग्रीक के समान है और यह दुनिया की कई आधुनिक भाषाओं में विकसित और प्रभावित हुई है।

संस्कृत भाषा में साहित्य के स्पेक्ट्रम में कविता और नाटक, और धार्मिक, वैज्ञानिक, तकनीकी और दार्शनिक ग्रंथों की समृद्ध परंपरा शामिल है। संस्कृत ने संस्कृति, कला, वास्तुकला, वैज्ञानिक विषयों और समाज के अन्य पहलुओं जैसे राजनीति, दर्शन आदि को आकार दिया है। आज, संस्कृत को भजन और मंत्रों के रूप में हिंदू अनुष्ठानों में एक औपचारिक भाषा के रूप में व्यापक रूप से उपयोग किया जाता है।

मूल रूप से, "संस्कृत" शब्द अन्य भाषाओं से अलग एक विशिष्ट भाषा के रूप में नहीं, बल्कि बोलने के विशेष रूप से परिष्कृत या परिपूर्ण तरीके के रूप में उभरा। संस्कृत का ज्ञान एक सामाजिक वर्ग मार्कर था और भाषा की शैक्षिक प्राप्ति प्राचीन भारत में उच्च जातियों का विशेषाधिकार थी।

आधुनिक संदर्भ में संस्कृत की प्रासंगिकता

पूर्व-शास्त्रीय रूप से वैदिक संस्कृत के रूप में जाना जाता है, जो वेदों को लिखे जाने से पहले सदियों से बोली जाने वाली भाषा थी, संस्कृत ने 600 ईसा पूर्व के आसपास एक प्राथमिक भाषा से धर्म और सीखने की भाषा में परिवर्तन शुरू किया। शास्त्रीय संस्कृत को सबसे पुराने जीवित संस्कृत व्याकरण, पाणिनि की अष्टाध्यायी द्वारा परिभाषित किया गया है। संस्कृत, जो मुख्य रूप से प्राचीन भारत की एक सीखी हुई भाषा थी, इस प्रकार आधुनिक इंडो-आर्यन भाषाओं में विकसित हुई।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

हालाँकि संस्कृत के विकास ने इसके रोजमर्रा के उपयोग की प्रकृति को कम कर दिया है, फिर भी आधुनिक दुनिया में इसका महत्व अभी भी बरकरार है। संस्कृत की संस्कृति संश्लेषण और आत्मसात की संस्कृति है और मानवतावाद, शांति और आपसी समझ और व्यक्ति और समाज के ध्वनि विकास का संदेश फैलाती है। भारत की सांस्कृतिक विरासत प्राचीन भारत के साहित्य, परंपराओं, स्मारकों और कला को आकार देने में संस्कृत के योगदान से उत्पन्न होती है जो हमें विरासत में मिली है।

संस्कृत साहित्य और ग्रंथ

संस्कृत साहित्य की विशाल श्रृंखला में विभिन्न वेद, उपनिषद, पुराण, महाकाव्य कविताएं, नाटक और दार्शनिक कार्य शामिल हैं। वेद हिंदू धर्म के सबसे पुराने और सबसे पवित्र ग्रंथ हैं, जिनमें भजन, अनुष्ठान और दर्शन शामिल हैं। उपनिषद वेदों की दार्शनिक और रहस्यमय शिक्षाएँ हैं। महाभारत और रामायण महाकाव्य कविताएँ हैं जो नायकों, देवताओं और राक्षसों की कहानियाँ सुनाती हैं। पुराण ब्रह्मांड के निर्माण, संरक्षण और विनाश का पौराणिक और ऐतिहासिक विवरण हैं। यह साहित्य सूत्र शैली में लिखा गया था, जिसमें संक्षिप्तता एक निर्णायक चरित्र है। सूत्र शैली में जो रचनाएँ लिखी गईं उन्हें 'वेदांग' नाम दिया गया। वे छह हैं - शिक्षा, कल्प, व्याकरण, निरुक्त, छन्द और ज्योतिष।

शास्त्रीय संस्कृत साहित्य में नाटक, कविता और दार्शनिक कार्य शामिल हैं जो प्रेम, नैतिकता, राजनीति और आध्यात्मिकता जैसे विभिन्न विषयों का पता लगाते हैं। शास्त्रीय संस्कृत साहित्य के कुछ प्रसिद्ध लेखक कालिदास, भर्तृहरि, शंकर और भवभूति हैं, जिन्होंने अभिज्ञान शाकुंतलम, मेघदूत, उत्तररामचरित और कई अन्य कालजयी रचनाएँ लिखी हैं। ये वैदिक ग्रंथ आज हिंदू अनुष्ठानों का एक अनिवार्य हिस्सा हैं और शास्त्रीय कार्यों का आज भी दुनिया भर में प्रमुखता से अध्ययन किया जाता है।[5,6]

विज्ञान और ज्ञान की भाषा के रूप में संस्कृत

संस्कृत न केवल धर्म और अध्यात्म की भाषा है, बल्कि विज्ञान और ज्ञान की भी भाषा है। ग्रंथों में कई वैज्ञानिक और गणितीय खोजें शामिल हैं जो हजारों साल पहले की गई थीं। संस्कृत शून्य की अवधारणा, दशमलव प्रणाली, पाइथागोरस प्रमेय और त्रिकोणमिति का वर्णन करने वाली पहली भाषा थी। संस्कृत में परिष्कृत व्याकरण और ध्वनि विज्ञान भी है जो मानव शरीर विज्ञान पर आधारित है। संस्कृत एक ऐसी भाषा है जो प्राचीन भारतीय सभ्यता के ज्ञान और रचनात्मकता को दर्शाती है।

संस्कृत ने चिकित्सा, खगोल विज्ञान और गणित जैसे विभिन्न वैज्ञानिक विषयों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। संस्कृत ग्रंथों ने प्राचीन भारतीय वैज्ञानिकों और चिकित्सकों के ज्ञान और प्रथाओं का दस्तावेजीकरण किया है, जिन्होंने इन क्षेत्रों में उल्लेखनीय योगदान दिया। उदाहरण के लिए, दुनिया की सबसे पुरानी चिकित्सा प्रणाली आयुर्वेद में विभिन्न रोगों की शारीरिक रचना, विकृति विज्ञान, निदान और उपचार। संस्कृत ग्रंथों में खगोल विज्ञान के सिद्धांतों और तरीकों की भी व्याख्या की गई है, जैसे कि ग्रहों की स्थिति, ग्रहण और कैलेंडर की गणना। संस्कृत ग्रंथों ने बीजगणित, ज्यामिति और कैलकुलस जैसी गणित की अवधारणाओं और तकनीकों को भी पेश किया है।

भारतीय कला, वास्तुकला और संस्कृति में संस्कृत

शास्त्रीय ग्रंथों ने कई पारंपरिक भारतीय कला रूपों, संगीत, नृत्य और नाटक के लिए स्रोत सामग्री, कहानियां और पात्र प्रदान किए हैं। नाट्यशास्त्र जैसे संस्कृत ग्रंथों ने भी अभिव्यक्ति के इन रूपों के नियम और सिद्धांत निर्धारित किए हैं। संस्कृत ने इन रूपों की भाषा, शैली और सौंदर्य को भी समृद्ध किया है। संस्कृत ने परंपराओं, रीति-रिवाजों, अनुष्ठानों, लोक कथाओं और गाथागीतों के माध्यम से भारत की सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित और प्रसारित करने में भी मदद की है। भारतीय संगीत का संस्कृत से संबंध उतना ही पुराना है जितना कि संस्कृत। वैदिक युग में वैदिक ऋचाओं के उच्चारण की सामगान पद्धति प्रचलन में थी। संगीत की उत्पत्ति सामवेद के मंत्रों से मानी जाती है।[4,5]

मंदिर वास्तुकला और प्रतिमा विज्ञान के विकास में संस्कृत ने अपरिहार्य भूमिका निभाई है। आगम, शिल्प शास्त्र और वास्तु शास्त्र जैसे संस्कृत ग्रंथों ने मंदिरों के डिजाइन, निर्माण और सजावट का निर्धारण किया है। संस्कृत ग्रंथों में विभिन्न देवताओं और उनकी छवियों के रूपों, विशेषताओं और प्रतीकों का भी वर्णन किया गया है।

संस्कृत का पुनरुद्धार - चुनौतियाँ और किये गये उपाय

संस्कृत के पुनरुद्धार और निरंतरता में बाधा उत्पन्न करने वाली प्रमुख चुनौतियों को संक्षेप में अनुवाद पर निर्भर संस्कृत सीखने की रटने की पद्धति, अकादमिक सिद्धांतों का पश्चिमी प्रभाव जो संस्कृत को एक राजनीतिक, दमनकारी और मृत भाषा के रूप में चित्रित

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

करता है, हाशिए पर डाल दिया जा सकता है। जागरूकता की कमी और अपर्याप्त संसाधनों और भाषा के मूल्य की सराहना की कमी के कारण शिक्षा प्रणाली और मीडिया में संस्कृत। उपेक्षा और विनाश के कारण संस्कृत पांडुलिपियों और मौखिक परंपराओं की हानि और प्रथम-भाषा संस्कृत बोलने वालों की कमी ने भी इसके मूल्य और प्रमुखता को कम कर दिया है।

संस्कृत अब एक प्राचीन संस्कृति की भाषा है जिसका इतिहास 4000-6000 वर्ष पुराना है। लेकिन जोरदार प्रयास किए गए हैं ताकि भारत भर के सैकड़ों शैक्षणिक संस्थानों में संस्कृत को एक विषय के रूप में पढ़ाया और आगे बढ़ाया जाए, साथ ही कुछ समर्पित भाषा शुद्धतावादियों के साथ जो इस शास्त्रीय भारतीय भाषा को पुनर्जीवित करने और बढ़ावा देने की कोशिश कर रहे हैं। राष्ट्रीय संस्कृत संस्थान और संस्कृत भारती जैसे संगठनों ने यह सुनिश्चित किया है कि संस्कृत को अधिक से अधिक प्रोत्साहित किया जाए। भारतीय सरकार. आदर्श संस्कृत महाविद्यालयों, शोध संस्थान, अष्टादशी परियोजना आदि को छात्रवृत्ति और धन प्रदान करके संस्कृत के प्रसार में सहायता की है। छात्रों की आसानी के लिए डिजिटल उपकरण और ई-सामग्री तैयार की गई है।

भारत में संस्कृत शिक्षा

भारत में संस्कृत ज्ञान से संबंधित शिक्षा प्रणाली गुरुकुल प्रणाली और गुरु-शिष्य परंपरा के रूप में व्यापक थी। औपनिवेशिक शासन के दौरान उन परंपराओं में भारी गिरावट देखी गई, जिसके बाद ऐसे संस्थानों की स्थापना करके आधुनिक भारत में गुरुकुल प्रणाली को शामिल करने के कई प्रयास किए गए जो एक शिष्य के समग्र विकास को सुनिश्चित करते हैं, उसे जीवन के सभी विषयों में सक्षम बनाते हैं। भारत के कई हिस्सों में भाषाई अनुशासन के रूप में भी संस्कृत पढ़ाई जाती है।

संस्कृत के क्षेत्र में संभावित और विकासशील डोमेन हैं एकेडेमिया (प्राथमिक और उच्च शिक्षा, अनुसंधान और अनुवाद, प्रतिलेखन), एआई नौकरियां जिसमें सॉफ्टवेयर और एआई विकसित करने में भाषा की भाषाई विशेषताओं का उपयोग करना शामिल है, और पुस्तकालयों में पुरालेखपालों की भूमिकाएं शामिल हैं। संग्रहालय.

भविष्य की संभावनाएँ और वैश्विक परिप्रेक्ष्य

संस्कृत ने अपने समृद्ध और विविध साहित्य, दर्शन और संस्कृति के लिए वैश्विक रुचि को आकर्षित किया है। यह इंडोलॉजी के अध्ययन के लिए जानकारी का एक महत्वपूर्ण स्रोत भी है, जो अकादमिक अनुशासन है जो दक्षिण एशिया के इतिहास, भाषाओं, धर्मों और संस्कृतियों से संबंधित है। दुनिया भर में कई विश्वविद्यालय और संस्थान संस्कृत और इंडोलॉजी में पाठ्यक्रम और कार्यक्रम पेश करते हैं, जैसे हार्वर्ड विश्वविद्यालय और लीडेन विश्वविद्यालय। इसने भाषाविदों का ध्यान आकर्षित किया है, जो उन्हें कई सिद्धांतों और व्याकरणों को सुलझाने और तैयार करने में मदद कर सकता है।

योग की भाषा होने के नाते संस्कृत ने दुनिया भर में योग की लोकप्रियता के साथ-साथ अंतरराष्ट्रीय स्तर पर भी गति पकड़ी है। आईटी विशेषज्ञों और डेवलपर्स का झुकाव संस्कृत तंत्र पर आधारित कोड और एआई विकसित करने के लिए संस्कृत की ओर है। विश्व स्तर पर संस्कृत को बढ़ावा देने के लिए दिग्गजों के अटूट प्रयासों के बावजूद, भाषा को पढ़ाने के शैक्षिक पहलू में अपर्याप्त शिक्षाशास्त्र, बोलचाल की संस्कृत की कमी और भाषा से रूढ़िवाद के पुराने अवशेष के लेबल को हटाना और समकालीन में इसकी कालातीतता स्थापित करना है। समय कुछ बड़ी चुनौतियाँ हैं जिन्हें सामूहिक कार्रवाई से ख़त्म किया जा सकता है और दूर किया जा सकता है।[3,4]

विचार-विमर्श

संस्कृत भारतीय संस्कृति की प्राणस्वरूपा; भारतीय धर्म-दर्शन आदि का प्रसार करने वाली; विश्व की सभी भाषाओं में प्राचीनतम तथा सर्वमान्य रूप में ग्रहण की गई है। सम्पूर्ण वैदिक-वाङ्मय, रामायण, महाभारत, पुराण, स्मृतिग्रन्थ, दर्शन, धर्मग्रन्थ, महाकाव्य, काव्य, नाटक, गद्यकाव्य, गीतिकाव्य, व्याकरण तथा ज्योतिष संस्कृत भाषा में ही उपलब्ध होकर इसके गौरव को बढाते हैं, जो भारतीय सभ्यता, भारतीय संस्कृति और भारतीय धरोहर की रक्षा करने में पूर्णतः सहायक है। संस्कृत से सुसंस्कृत समाज का निर्माण होता है, जैसे- वैदिक संस्कृति में गर्भ से पंचतत्व विलय पर्यन्त षोडश संस्कार का विधान है। संस्कार से शरीर और मन पवित्र होता है; पर्यावरण शुद्ध होता है। संस्कारों का वैज्ञानिक महत्त्व भी है। जिस प्रकार उदर के लिए भोजन की आवश्यकता होती है; उसी प्रकार नैतिक मूल्यों से ही मानव अपनी सभ्यता का परिचय देता है। संस्कृत साहित्य में ऐसे सुभाषितों की भरमार है; जो मनुष्य की सभी समस्याओं का समाधान करते हैं; जैसे-

मातृवत् परदारेषु परद्रव्येषु लोष्टवत्।
आत्मवत्सर्वभूतेषु यः पश्यति स पण्डितः ।।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

उपर्युक्त शास्त्रीय और आधुनिक रूप से संस्कृत के महत्त्व को स्वीकार करते हुए 'नई राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2018' में भी बहुभाषावाद को प्रासंगिक बताते हुए शिक्षाक्षेत्र के सभी स्तरों पर संस्कृत को जीवन जीने की मुख्य धारा में शामिल कर अपनाने पर बल दिया गया है। अतः संस्कृत का अध्ययन कर के छात्र-छात्राएं न केवल अपने-अपने अतीत से गौरवान्वित होकर वर्तमान में संतुलित व्यवहारशील की ओर अग्रसर होंगे; अपितु भविष्य के प्रति भी उल्लासित होंगे।

इस भाषा की वैज्ञानिकता का अध्ययन करके ही अनुसंधान संस्था नासा ने 1987 ई. में ही संस्कृत को कंप्यूटर के लिए सर्वोत्तम भाषा घोषित कर दिया था, जिस कारण आज उस संस्था के द्वारा संस्कृत में सतत शोध किए जा रहे हैं। पाश्चात्य भाषा वैज्ञानिकों ने पाणिनि-व्याकरण को मानवीय-बुद्धिमत्ता की सर्वोत्कृष्ट रचना कहा है। आज भी अमेरिका, जर्मनी आदि अनेक देश संस्कृत के क्षेत्र में सतत उत्कृष्ट अनुसंधान कार्य करके इसकी श्रीवृद्धि में प्रयत्नशील है। अमेरिका की सबसे बड़ी संस्था नासा (National Aeronautics Space Administration) ने संस्कृत भाषा को अंतरिक्ष में कोई भी मैसेज भेजने के लिए सबसे उपयोगी दावा माना है; क्योंकि संस्कृत के वाक्य उल्टे हो जाने पर भी अपना अर्थ नहीं बदलते है। दुनिया की 97 प्रतिशत भाषाएँ प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से संस्कृत से प्रभावित हैं। यह अकेली ऐसी भाषा है जिसे बोलने में जीभ की सभी संवेदिकाओं का इस्तेमाल होता है। अमेरिकन हिंदू यूनिवर्सिटी के मुताबिक संस्कृत बोलने से शरीर में ऊर्जा का संचार होता है और रक्त का प्रवाह बेहतर होता है। नासा की एक रिपोर्ट के अनुसार अमेरिका छठी और सातवीं पीढ़ी के ऐसे सुपर कंप्यूटर तैयार कर रहा है, जो संस्कृत पर आधारित होंगे। संस्कृत की पांडुलिपियों पर शोध के लिए नासा में अलग से एक डिपार्टमेंट बनाया गया है। नासा के पास ऐसी 60 हजार से ज्यादा पांडुलिपियां हैं। वहीं लंदन के जेम्स जूनियर स्कूल में सभी छात्रों के लिए संस्कृत की पढ़ाई अनिवार्य है। कनाडा में पहली से आठवीं तक संस्कृत भाषा की शिक्षा दी जा रही है । बोलचाल की भाषा में संस्कृत भारत के संविधान में आठवीं अनुसूची में शामिल है; जबकि उत्तराखंड राज्य में इसे दूसरी राजकीय भाषा का दर्जा हासिल है। इसके अलावा देश के कई हिस्सों में इसे सामान्य बोलचाल की भाषा के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। कर्नाटक के मुत्तूर, मध्यप्रदेश में नरसिंहपुर जिले के मोहाद और राजगढ़ जिले के झिरि, राजस्थान के बूंदी जिले के कापेरान, बांसवाड़ा जिले के खाडा और गनोड़ा, उत्तरप्रदेश के बागपत में बावली और ओडिशा के श्यामसुंदरपुर गांव में संस्कृत बोलचाल की भाषा है।[2,3]

संस्कृत में इतनी वैज्ञानिकता होने के कारण ही अमेरिका, रूस, स्वीडन,कनाड़ा, जर्मनी, ब्रिटेन, फ्रांस, जापान, आस्ट्रिया देशों में नर्सरी से ही बच्चों को संस्कृत पढ़ाई जाने लगी है। कहीं ऐसा न हो कि हमारी संस्कृत कल वैश्विक भाषा बन जाए और हम संस्कृत को तुच्छ या मृत भाषा का दर्जा देकर उस पर केवल थोड़े और भद्दे मसखरों की भाषा समझते रहे। आने वाले समय में संस्कृत कंप्यूटर की भाषा बनने जा रही है। अतः अंग्रेजी भाषा के साथ-साथ अपने बच्चों को संस्कृत का ज्ञान अवश्य दिलाएं । संस्कृत का उपहास करके हम अपनी जननी, अपनी सभ्यता और संस्कृति का उपहास नहीं करें।

परिणाम

संस्कृत में कुछ उल्लेखनीय विशेषताएं हैं जो हमारे सीखने के तरीके के लिए महत्वपूर्ण हैं। यह न केवल वर्तमान के लिए, बल्कि भविष्य के लिए भी सच है।

संस्कृत की व्यवस्थित प्रकृति असाधारण है। इसकी व्याकरणिक संरचना 5वीं शताब्दी ईसा पूर्व में महर्षि पाणिनि (1) द्वारा अच्छी तरह से परिभाषित और सटीक रूप से निर्धारित की गई थी , और दो सहस्राब्दियों से अधिक समय में इसमें थोड़ा बदलाव आया है। संस्कृत भी लगभग पूरी तरह से आत्मनिर्भर है, और कोई भी नई शब्दावली या संरचना भाषा के भीतर ही उत्पन्न की जा सकती है।

आमतौर पर कोई संस्कृत को केवल धर्म, धर्मग्रंथ और प्रार्थना की भाषा मानता है। लेकिन सच तो यह है कि संस्कृत ही वह भाषा है जिसमें लगभग हर विषय लिखा जाता था। वास्तव में, संस्कृत में धार्मिक विषयों पर ग्रंथों की तुलना में अधिक गैर-धार्मिक, वैज्ञानिक साहित्य है। (2)

भारत, जो संस्कृत की उत्पत्ति की भूमि है, एक समय वैज्ञानिक खोजों के क्षेत्र में अग्रणी था, और उनमें से लगभग सभी संस्कृत में लिखे गए थे।

- कृषि और बागवानी: कृषि-शास्त्र
- कीमिया: रस-शास्त्र
- वास्तुकला: शिल्प-शास्त्र
- खगोल विज्ञान और ज्योतिष: ज्योतिष-शास्त्र
- वनस्पति विज्ञान: वृक्षायुर्वेद
- रसायन विज्ञान: रसायन-शास्त्र
- गणित: गणित-शास्त्र
- यांत्रिक विज्ञान: यंत्र-शास्त्र
- चिकित्सा विज्ञान: आयुर्वेद
- धातुकर्म: लौह-शास्त्र
- भौतिकी: पदार्थ-विज्ञान
- जीवविज्ञान: जीवविज्ञान

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

- फिजियोलॉजी: शरीरविज्ञान

संस्कृत क्यों प्रासंगिक है - आज और कल

संस्कृत न केवल आज बल्कि मानवता के प्रगतिशील विकास के लिए भी प्रासंगिक बनी हुई है। इस तरह के दावे के कुछ कारण इस प्रकार हैं:

1. यह स्पष्टता की भाषा है
2. यह अनंत संख्या में शब्द बना सकता है
3. यह एक जीवित, सांस लेती हुई भाषा है
4. यह असाधारण रूप से लचीला है

विशिष्टता/स्पष्टता

संस्कृत एक ऐसी भाषा है जो चीजों को बहुत स्पष्टता से समझाती है। इसके संबंध में सबसे महत्वपूर्ण विशेषताओं में से एक यह है कि संस्कृत कोई वस्तु-विशिष्ट भाषा नहीं है ।

आइए इसे एक उदाहरण से समझते हैं.

यह सर्वविदित है कि संस्कृत में एक ही वस्तु के लिए अनेक शब्दों का प्रयोग होता है। अधिकांश लोग सोचते हैं कि इससे संस्कृत सीखने में कठिनाई होती है, क्योंकि किसी विशेष वस्तु को संदर्भित करने वाले विभिन्न शब्दों में कोई सर्वसम्मति नहीं है। लेकिन वास्तव में, यह अर्थ को स्पष्ट और अधिक विशिष्ट बनाता है।

उदाहरण के लिए, पानी को संदर्भित करने के लिए, कुछ लोग जलम् जलम् शब्द का उपयोग करते हैं , अन्य लोग नीरम नीरम का उपयोग करते हैं , फिर भी अन्य लोग पणीयम् पनीयम् का उपयोग करते हैं, फिर भी अन्य लोग वारि वारि का उपयोग करना पसंद करेंगे । इस प्रकार अमरसिंह का अमरकोश जल के लिए 28 शब्द प्रदान करता है। (3) वास्तव में, अकेले पानी के लिए दो सौ से अधिक शब्द उपयोग किए जाते हैं। (3)

एक ही वस्तु के लिए इतने सारे शब्दों का कारण यह है कि संस्कृत उपयोगकर्ता कभी भी वस्तु के लिए विशिष्ट शब्दों का प्रयोग नहीं करते, बल्कि वस्तु के विभिन्न गुणों का वर्णन करने वाले शब्दों का प्रयोग करते हैं। इसलिए यहां पानी के लिए इस्तेमाल किए गए कई शब्दों में से प्रत्येक शब्द पानी की एक विशेष संपत्ति का वर्णन करता है।[1]

- जलम् जलम् शब्द बताता है कि पानी अपनी तरल अवस्था से ठोस बन सकता है। जलम् शब्द का मूल जल है जिसका अर्थ है 'कठोर करना'।
- नीरम नीरम शब्द नी नामक धातु से आया है , जिसका अर्थ है 'वह जो नेतृत्व करता है या हमेशा आगे बढ़ता है।'
- वारि वारि शब्द का अर्थ है 'वह जो वाष्पित हो जाता है, बादल में बदल जाता है और ढक जाता है'।

इस प्रकार, संस्कृत का प्रत्येक शब्द वस्तु के एक गुण का वर्णन करता है, और अपने उपयोगकर्ताओं को वस्तुनिष्ठ शब्द की समग्र समझ प्रस्तुत करता है।

अंतहीन शब्द

संस्कृत की एक और महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि क्योंकि शब्द मूल-ध्वनियों से बनते हैं, इसलिए इसमें आवश्यकतानुसार उतने शब्द बनाने की क्षमता है। और बने शब्द सरल और स्व-व्याख्यात्मक हैं।

उदाहरण के लिए, शब्द रूप , जिसका अर्थ है 'रूप', को ग्राहकम् ग्रहकम्, जिसका अर्थ है 'जो पकड़ता है', के साथ जोड़कर रूपग्राहकम् रूपाग्रहकम् बनाया जाता है, जिसका अर्थ है 'कैमरा'। उसी तरह, ध्वनिग्राहकम् ध्वनिग्रहकम् का अर्थ 'माइक्रोफोन' या 'ध्वनि-रिसीवर' हो सकता है, या ह्वनाग्राहकम् ह्वनाग्राहकम् का अर्थ 'कॉल-रिसीवर' हो सकता है।

इस पारदर्शी प्रणाली के आधार पर, कोई भी व्यक्ति रोजमर्रा के उपयोग के लिए आवश्यक किसी भी मात्रा में शब्द बना सकता है। उदाहरण के लिए, एक मोनोसिलेबिक मूल-ध्वनि कृ क्र, जिसका मूल-अनुभव 'करना' या 'बनाना' या 'क्रिया में डालना' है, को मिलाकर कोई व्यक्ति अलग-अलग अर्थ वाले हजारों शब्द प्राप्त कर सकता है। फिर भी ये सभी अर्थ मूल-अनुभव द्वारा स्पष्ट रूप से परिभाषित होंगे।

इसी प्रकार, तृ तृ प्रत्यय जोड़ने पर , हमें कर्तृ कर्ता शब्द मिलता है , जिसका अर्थ है 'कर्त्ता'। अन अना जोड़ने पर , हमें करण करण प्राप्त होता है, जिसका अर्थ है 'करना' या 'एक उपकरण जो करता है'। य य जोड़ने पर हमें कार्य कार्य मिलता है , जिसका अर्थ है 'किया जाने वाला कार्य'। और तव्य तव्य जोड़ने पर , हमें कर्तव्य- कर्तव्य मिलता है, जिसका अर्थ है 'वह जो अवश्य किया जाना चाहिए या किया जाना चाहिए'... इत्यादि इत्यादि।

जीवित और सांस लेने वाली भाषा

यह कहने का क्या मतलब है कि संस्कृत भाषा एक जीवित, सांस लेती इकाई है? यह गुण संस्कृत वर्णमाला की व्यवस्था के तरीके से आता है।

संस्कृत वर्णमाला में, स्वर और व्यंजन को दो अलग-अलग समूहों में व्यवस्थित किया गया है, प्रत्येक अत्यंत तार्किक तरीके से।[1,2,3]

व्यंजन को आवाज की स्थिति, उच्चारण के तरीके, उच्चारण के स्थान और उन्हें उत्पन्न करने के लिए आवश्यक अंतर-मौखिक दबाव के अनुसार ऊर्ध्वाधर और क्षैतिज समूहों में व्यवस्थित किया जाता है। इस व्यवस्था में तर्क मानव स्वर शरीर रचना पर आधारित है, जिससे हमारे लिए प्रत्येक व्यंजन की ध्वनि को याद रखना आसान हो जाता है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

संस्कृत में, सभी ध्वनियाँ पाँच अलग-अलग स्थानों से व्यक्त की जाती हैं, जो मुँह में स्थित होती हैं: गला, तालु, मस्तिष्क, ऊपरी दाँतों की जड़ें और होंठ। इसके आधार पर, ध्वनियाँ या तो कण्ठस्थ, तालु, प्रमस्तिष्क, दंत या लेबियाल होती हैं।
हालाँकि व्यंजन के क्षैतिज समूह के अक्षरों का उच्चारण एक ही स्थान से किया जाता है, लेकिन उस समूह की प्रत्येक ध्वनि अपने आंतरिक प्रयासों के कारण दूसरों से भिन्न होती है।
उदाहरण के लिए: क क ख ख ग ग घ घ और ङ ṅa कण्ठ समूह से संबंधित हैं। यहाँ,

- क का एक कठोर, बिना आवाज वाला व्यंजन है जिसमें न्यूनतम सांस छोड़ी जाती है,
- ख खा भी कठोर और बिना आवाज़ वाला है, लेकिन अधिकतम सांस छोड़ने के साथ उच्चारित होता है;
- ग ग नरम है, और न्यूनतम सांस छोड़ने के साथ उच्चारित होता है;
- घ घ भी नरम है, लेकिन अधिकतम सांस छोड़ने के साथ उच्चारित होता है।
- ङ ṅa समूह में अंतिम ध्वनि है - नरम और स्वरयुक्त, लेकिन अनुनासिक। इस ध्वनि के लिए नाक और मुंह दोनों से सांस छोड़ी जाती है।

जब हम व्यंजन की पहली पंक्ति का उच्चारण करते हैं: क का, ख ख, ग ग, घ घ, ङ ṅa , तो हम इस वर्णमाला की लयबद्ध सांस को महसूस करते हैं। अक्षर भी हमारी तरह सांस लेते हैं ।
यह कोई संयोग नहीं है. संस्कृत के गठन के सिद्धांतों की गहरी समझ से हमें पता चलता है कि यह भाषा ध्वनि विज्ञान की स्पष्ट समझ पर आधारित है।
अब जब हम जानते हैं कि संस्कृत वर्णमाला एक जीवित, सांस लेने वाली चीज़ है, तो हम एक अविश्वसनीय कदम आगे बढ़ गए हैं। यह अद्वितीय वर्णमाला, अपनी व्यवस्था से, हमें प्राणायाम का अभ्यास भी सिखा सकती है ।
संस्कृत वर्णमाला में व्यंजनों की व्यवस्था की तरह ही ध्वनियों की व्यवस्था भी व्यवस्थित एवं व्यापक है।
संस्कृत में रुकें व्यंजनों को बारी-बारी से व्यवस्थित किया जाता है। प्रत्येक समूह की पहली और तीसरी ध्वनि न्यूनतम सांस छोड़ने के साथ व्यक्त की जाती है, जबकि दूसरी और चौथी अधिकतम सांस छोड़ने के साथ व्यक्त की जाती है। इसलिए साँस छोड़ना न्यूनतम चलता है; अधिकतम; कम से कम; अधिकतम.
प्रत्येक समूह एक ओरोनसल ध्वनि के साथ समाप्त होता है, जिसके लिए सांस को मुंह और नाक दोनों से छोड़ना पड़ता है।
लेकिन यहाँ आश्चर्यजनक बात है.
जब हम जानबूझकर न्यूनतम सांस के साथ ध्वनि का उच्चारण करते हैं, तो हम केंद्रित, एक-बिंदु एकाग्रता की तीव्रता का अनुभव करते हैं। इसी प्रकार, जब हम अधिकतम सांस छोड़ कर किसी ध्वनि को उच्चारित करते हैं, तो हमें विश्राम या विस्तार की अनुभूति होती है।[4,5,6]
इसलिए यदि हम सचेत रूप से संस्कृत वर्णमाला का उच्चारण करते हैं, तो हम वास्तव में न्यूनतम और अधिकतम सांस, संकुचन और विस्तार, एकाग्रता और ध्यान के खेल का अनुभव कर सकते हैं, और वर्णमाला की सांस को महसूस कर सकते हैं। वास्तव में, व्यक्ति प्राणायाम के लाभ का अनुभव करता है ।
प्रत्येक ध्वनि हमारे स्वर रज्जु और तंत्रिका तंत्र पर प्रभाव डालती है। प्रत्येक ध्वनि हमारे भीतर एक अलग राग छेड़ती है। इसलिए, संस्कृत वर्णमाला का पाठ करना केवल ध्वन्यात्मकता का एक अभ्यास नहीं है, बल्कि मन को संतुलित और शांत करने का एक महत्वपूर्ण तरीका है।
संस्कृत के अक्षर मस्तिष्क और तंत्रिका तंत्र की सभी शक्तियों को उत्तेजित करने और एकाग्रता, स्मृति और धारणा में सुधार करने में मदद करने के लिए पर्याप्त शक्तिशाली हैं।
अनुस्वार - अनुस्वार संस्कृत में एकमात्र शुद्ध नासिका ध्वनि है और यह मुंह को पूरी तरह से बंद करके और नाक के माध्यम से हवा छोड़ने से उत्पन्न होती है। ध्वनि को गले तक खींचा जाता है, और फिर 'मम्म' की होंठ ध्वनि के साथ नाक में डाला जाता है।
इसे सभी स्वरों के साथ मिलाकर इसका उच्चारण करने से भ्रामरी प्राणायाम , या मधुमक्खी साँस लेने की तकनीक का लाभ मिलता है ।
विसर्ग - विसर्ग ध्वनि : विसर्ग (विसर्ग) दो बिंदुओं के लिए शब्द है जो अक्सर संस्कृत वर्ण के ठीक बाद लगाए जाते हैं। संस्कृत में विसर्ग (visarga) शब्द का अर्थ है 'आगे भेजना' या 'मुक्त करना'। यह साँस छोड़ने के माध्यम से ध्वनि की रिहाई को संदर्भित करता है, जिसे दो बिंदुओं द्वारा दर्शाया जाता है। ध्वन्यात्मक रूप से, ध्वनि भीतर से हवा को बाहर निकालकर एक स्वर के बाद उत्पन्न होती है।
विसर्ग ऊर्जा को बाहर धकेलता है या खोलता है, और अभिव्यक्ति, विस्तार और अहसास से जुड़ा है । यह वही प्रभाव है जो बाह्यकुंभक (बाह्यकुंभक) का प्राणायाम में होता है , और ध्यान और एकाग्रता में मदद करता है।
उरस्य - उरस्य ध्वनि: संस्कृत वर्णमाला की अंतिम ध्वनि (ह हा) गले से उत्पन्न होने वाली विशुद्ध रूप से महाप्राण ध्वनि है। हालाँकि, जब इस ध्वनि को प्लोसिव्स के अंतिम तीन समूहों में से प्रत्येक के पांचवें अक्षर (ण न न न म मा) और अर्ध-स्वर (य या र रा ल ला व वा) के साथ जोड़ा जाता है, तो यह अब ग्लोटल नहीं है ; यह एक पेक्टोरल या उरस्या ध्वनि बन जाती है, जिसके लिए वक्ष पर ज़ोर लगाना पड़ता है।
(हकारं पञ्चमैर्युक्तिमन्तस्थाभिश्च संयुतम्। औरस्यं तं विजानीयात्कथ्यमाहुरसंयुतम् ॥
हकारं पंचमैर्युक्तमंतस्तभिश्च संयुतम् ।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

औरस्यां तं विजानीयात्कथ्यमहुरासंयुतम् (4)
निम्नलिखित सात संस्कृत में उरस्य (urasya) ध्वनियाँ हैं।
ह ह
इन ध्वनियों के लिए हमें हा ध्वनि को वक्षस्थल से बाहर निकालना होगा और फिर उसके साथ शेष ध्वनियों का उच्चारण करना होगा।
यदि हम इन ध्वनियों को एक साथ बार-बार उच्चारित करते हैं, तो हम वक्ष और उदर क्षेत्र में तनाव महसूस कर सकते हैं। हम वायु विमोचन के लयबद्ध खेल को भी महसूस कर सकते हैं। यह प्राणायाम में कपालभाति क्रिया (कपालभाति क्रिया) का अभ्यास करने के समान है ।
कोई सोचेगा कि तार्किक रूप से व्यवस्थित वर्णमाला जो हमें प्राणायाम भी सिखाती है , अपने आप में आश्चर्यजनक होगी। लेकिन व्यवहार में, इसका और भी अधिक उल्लेखनीय उपयोग हुआ है।
संस्कृत वर्णमाला, अपनी व्यवस्थित और वैज्ञानिक व्यवस्था के साथ, स्वरों के उत्पादन को समझने और उन्हें याद रखने का एक सरल साधन प्रदान करती है।[6,7,8]
इस वजह से, यह अब प्लास्टिक सर्जनों, भाषण रोगविज्ञानियों, दंत चिकित्सकों और आवाज संस्कृति विशेषज्ञों के ध्यान में आ गया है, जो महसूस करते हैं कि संस्कृत वर्णमाला भाषण मूल्यांकन का एक सरलीकृत संस्करण बनाने में एक मूल्यवान उपकरण हो सकती है जिसका उपयोग मूल्यांकन करने के लिए किया जा सकता है और रोगियों में वाणी-संबंधी विकारों और विकलांगताओं की पहचान करना।
Flexibility
आइए अब संक्षेप में संस्कृत की अद्भुत लचीलेपन का पता लगाएं।
हममें से ज्यादातर लोग शायद इस प्रसिद्ध वाक्य से परिचित हैं: 'जब मैंने एल्बा को देखा तो मैं सक्षम था।'
यह वाक्यांश 1848 में एक पत्रिका लेखक द्वारा तैयार किया गया था, जिसने एल्बा द्वीप पर नेपोलियन के निर्वासन को अपने शब्दों के खेल के लिए प्रेरणा के रूप में इस्तेमाल किया था। (5)
जैसे ही हम इस वाक्य को दोबारा पढ़ते हैं, हमें पता चलता है कि इसमें क्या खास है। इसे एक बार फिर पढ़ने पर, इस बार दाएं से बाएं, हम पाते हैं कि यह वही पढ़ता है। इसे पैलिंड्रोम कहा जाता है.
अंग्रेजी में पीप, नून, डैड, मैडम आदि जैसे शब्द हैं, जिन्हें बाएं से दाएं या दाएं से बाएं पढ़ने पर एक जैसी ध्वनियां और अक्सर एक जैसे अर्थ मिलते हैं।
आइए अब इस श्लोक को एक संस्कृत पाठ से देखें जिसमें हम न केवल एक पलिंड्रोम देखेंगे बल्कि कवि की प्रतिभा और संस्कृत भाषा की अत्यधिक लचीलेपन से भी आश्चर्यचकित हो जाएंगे।
तं भूसुतामुक्तिमुदारहसं वन्दे यतो भव्यभव्यं दयाश्रीः। श्रीयादवं भव्यभतोयदेवं संहारदामुक्तिमुतासुभूतम्॥

तं भूसुतामुक्तिमुदारहसं वन्दे यतो भव्यभव्यं दयाश्रीः।
श्रीयादवं भव्यभतोयदेवं संहारदामुक्तिमुतासुभूतम्।। (6)
यहाँ हम देख सकते हैं कि श्लोक का दूसरा भाग पहले भाग को उलटने से बनता है। पूरी कविता, बाएँ से दाएँ और दाएँ से बाएँ, एक ही है।
लेकिन इस श्लोक में और भी बहुत कुछ है।
इस श्लोक के बारे में सबसे आश्चर्यजनक और उत्कृष्ट बात यह है कि पहले भाग में भगवान राम का वर्णन है, और दूसरे भाग में, जो पहले भाग के विपरीत है, भगवान कृष्ण का वर्णन है। किसी को आश्चर्य होता है कि कवि ने इसे कैसे प्रबंधित किया होगा!
इसके अलावा, हम यह भी देख सकते हैं कि पहली पंक्ति को उलटने या दाएँ से बाएँ पढ़ने पर, लघु और दीर्घ द्वारा अक्षरों की व्यवस्था बरकरार रहती है, लयबद्ध पैटर्न में कोई हानि नहीं होती है। यह मेट्रिक्स के नियमों, व्याकरण के नियमों और कविता के नियमों का पूरी तरह से पालन करता है। सब कुछ पूरी तरह से बनाए रखा गया है।
इसे हम क्या कह सकते हैं? क्या यह कला है? विज्ञान? अंक शास्त्र? या यह काव्य है, कोई सूत्र है, कोई मंत्र है?
लालित्य और सुंदरता
लचीलेपन से जुड़ा एक और पहलू है - संस्कृत भाषा की भव्यता और सुंदरता का। आइए गणित की एक प्रसिद्ध समस्या पर आधारित इस असाधारण सुंदर उदाहरण को देखें।
चुनौती शतरंज की बिसात के एक कोने में एक शूरवीर को रखने और किसी भी वर्ग पर दो बार उतरे बिना, शूरवीर का उपयोग करके सभी 64 वर्गों को कवर करने की है।
स्विस गणितज्ञ यूलर ने 18वीं शताब्दी में इस समस्या का उत्तर खोजा। यही कारण है कि इसे यूलर की शतरंज और नाइट समस्या के रूप में जाना जाता है।
हालाँकि, भारत में, तमिल संत श्री वेदांत देसिकन द्वारा लिखित 'पा डुक आ सहस्राम ' नामक एक पांडुलिपि की खोज की गई है, जिसमें हमें भगवान राम की लकड़ी की चप्पलों की प्रशंसा में लिखे गए एक हजार श्लोक मिलते हैं। यहाँ प आ दुक आ सहस्राम के दो श्लोक हैं :

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

स्थिरागसाँ सदाराध्या विहतकत्तमता | सत्पादुके शरसा मा रङ्गाजपडन्नय ||

स्थिरागसं सदाराध्य विहतकतामाता |
सत्पादुके सरसा मा रंगराजपादन्नय ||

स्थिता समयराजत्पा गतरामादके गवि | दुरंहसां सन्नतादा साध्यतापकरासर ||

स्थिता समयराजत्पा गतरामदाके गवि |
दुरंहसां सन्नतादा साध्यतापकरसरा || (7)
जैसा कि हम देख सकते हैं, पहली कविता के शब्दांश शतरंज की बिसात पर वर्गों में लिखे गए हैं। फिर, पहले अक्षर से शुरू करते हुए, यदि दूसरी कविता को पहली कविता के अक्षरों के बीच पढ़ा जाता है, तो कोई पाता है कि अक्षर शतरंज की बिसात पर शूरवीर की चाल का अनुसरण करते हैं, साथ ही शतरंज और शूरवीर समस्या का समाधान देते हैं। वास्तव में, इस तरह से छंद लिखना मूल शतरंज और नाइट समस्या से कहीं अधिक कठिन है।
व्यक्ति तब और भी आश्चर्यचकित हो जाता है जब उसे पता चलता है कि भारतीय संत यूलर से 500 साल पहले रहते थे, और पांडुलिपि 13वीं शताब्दी में लिखी गई थी।
ऐसे अनगिनत उदाहरण हैं जो संस्कृत भाषा की अद्भुत लचीलेपन को प्रदर्शित करते हैं। ये न केवल इसकी शब्दावली की समृद्धि को दर्शाते हैं, बल्कि इसकी अभिव्यक्ति की अद्भुत शक्ति को भी दर्शाते हैं। तो हम प्रश्न पर वापस आते हैं - क्या संस्कृत आज भी प्रासंगिक है?
सबसे पुरानी मौजूदा भाषाओं में से एक के रूप में, संस्कृत ने भारत की संस्कृति और सभ्यता के इतिहास को आकार देने में बहुत योगदान दिया है। लेकिन आज भी, इसकी सुंदरता, तर्क और लगभग त्रुटिहीन संरचना एक सार्वभौमिक अपील लाती है।
रोजमर्रा की जिंदगी में संस्कृत का उचित उपयोग इसके उपयोगकर्ता को बढ़ी हुई रचनात्मकता और कल्पना, स्पष्ट सोच, गहरी एकाग्रता और बेहतर स्मृति प्रदान कर सकता है।
संस्कृत न केवल छात्रों को भाषण, भाषा कौशल और तार्किक सोच में आत्मविश्वास और स्पष्टता हासिल करने में मदद करती है, बल्कि यह विज्ञान, गणित और कंप्यूटर जैसे अन्य, असंबंधित प्रतीत होने वाले विषयों में भी उनके कौशल और समझ को बढ़ाती है। इसके अलावा, संस्कृत छात्रों में अपने और अपने आस-पास की हर चीज़ के बारे में गहरी जागरूकता पैदा करती है। ये शाश्वत गुण हैं.
संस्कृत की अभिव्यक्ति की बहुमुखी प्रतिभा, नए शब्द बनाने की इसकी अद्भुत शक्ति, भविष्य की चुनौतियों और जरूरतों को पूरा करने की इसकी क्षमता, इसका अविश्वसनीय लचीलापन और विज्ञान और प्रौद्योगिकी के इस युग में इसकी उपयोगिता...। इसी में संस्कृत की प्रासंगिकता निहित है।
आइए हम श्री अरबिंदो द्वारा अनुवादित एक संस्कृत श्लोक के साथ अपनी बात समाप्त करें:
केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हारा न चन्द्रोज्ज्वला न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजाः। वान्येका समलङक्रोति पुरुषं या संस्कृता धार्यते क्ष्यन्ते खलु श्यामाणि सततं वाघ्भूषणं कृष्णम् ॥

केयूराणि न भूषयन्ति पुरुषं हरा न चंद्रोज्जवला
न स्नानं न विलेपनं न कुसुमं नालंकृता मूर्धजा:।
वाण्येका समालंकारोति पुरुषं य संस्कृत धार्यते
क्ष्यन्ते खलु भूषणानि सततं वाग्भूषणं भूषणम्।।
(8)
न तो बाजूबंद ही मनुष्य को सुशोभित करते हैं,
न ही चंद्राकार मोतियों से भरे हार,
न स्नान, न मलहम, न व्यवस्थित घुँघरू।
'यह उत्कृष्ट भाषण की कला है जो केवल
उसे सुशोभित कर सकती है: गहने नष्ट हो जाते हैं, मालाएँ फीकी पड़ जाती हैं;
यह केवल स्थिर रहता है और सदैव चमकता रहता है।
(9)

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

निष्कर्ष

ऋग्वेदकाल से लेकर आज तक संस्कृत भाषा के माध्यम से सभी प्रकार के वाङ्मय का निर्माण होता आ रहा है। हिमालय से लेकर कन्याकुमारी के छोर तक किसी न किसी रूप में संस्कृत का अध्ययन अध्यापन अब तक होता चल रहा है। भारतीय संस्कृति और विचार की धारा का माध्यम होकर भी यह भाषा अनेक दृष्टियों से धर्मनिरपेक्ष (सेक्यूलर) रही है। इस तरह भाषा में धार्मिक, साहित्यिक, आध्यात्मिक, दार्शनिक, वैज्ञानिक औजूझ[8,9,10]
संस्कृत भाषा का साहित्य अनेक अमूल्य ग्रंथरत्नों का सागर है, इतना समृद्ध साहित्य किसी भी दूसरी प्राचीन भाषा का नहीं है और न ही किसी अन्य भाषा की परम्परा अविच्छिन्न प्रवाह के रूप में इतने दीर्घ काल तक रहने पाई है। अति प्राचीन होने पर भी इस भाषा की सृजन-शक्ति कुण्ठित नहीं हुई, इसका धातुपाठ नित्य नये शब्दों को गढ़ने में समर्थ रहा है।

संस्कृत साहित्य का महत्त्व

विश्वभर की समस्त प्राचीन भाषाओं में संस्कृत का सर्वप्रथम और उच्च स्थान है। विश्व-साहित्य की पहली पुस्तक ऋग्वेद इसी भाषा का देदीप्यमान रत्न है। भारतीय संस्कृति का रहस्य इसी भाषा में निहित है। संस्कृत का अध्ययन किये बिना भारतीय संस्कृति का पूर्ण ज्ञान कभी सम्भव नहीं है।
अनेक प्राचीन एवं अर्वाचीन भाषाओं की यह जननी है। आज भी भारत की समस्त भाषाएँ इसी वात्सल्यमयी जननी के स्तन्यामृत से पुष्टि पा रही हैं। पाश्चात्य विद्वान इसके अतिशय समृद्ध और विपुल साहित्य को देखकर आश्चर्य-चकित होते रहे हैं। भारतीय भाषाओं को जोड़ने वाली कड़ी यदि कोई भाषा है तो वह संस्कृत ही है।
विश्व की समस्त प्राचीन भाषाओं और उनके साहित्य (वाङ्मय) में संस्कृत का अपना विशिष्ट महत्त्व है। यह महत्त्व अनेक कारणों और दृष्टियों से है। भारत के सांस्कृतिक, ऐतिहासिक, धार्मिक, अध्यात्मिक, दर्शनिक, सामाजिक और राजनीतिक जीवन एवं विकास के सोपानों की संपूर्ण व्याख्या संस्कृत वाङ्मय के माध्यम से आज उपलब्ध है। सहस्राब्दियों से इस भाषा और इसके वाङ्मय को भारत में सर्वाधिक प्रतिष्ठा प्राप्त रही है। भारत की यह सांस्कृतिक भाषा रही है। सहस्राब्दियों तक समग्र भारत को सांस्कृतिक और भावात्मक एकता में आबद्ध रखने को इस भाषा ने महत्वपूर्ण कार्य किया है। इसी कारण भारतीय मनीषा ने इस भाषा को अमरभाषा या देववाणी के नाम से सम्मानित किया है।[11,12,13]

ऋग्वेदसंहिता : सबसे पुराना ग्रंथ

ऋग्वेदसंहिता के कतिपय मंडलों की भाषा संस्कृतवाणी का सर्वप्राचीन उपलब्ध स्वरूप है। ऋग्वेदसंहिता इस भाषा का पुरातनतम ग्रंथ है। यहाँ यह भी स्मरण रखना चाहिए कि ऋग्वेदसंहिता केवल संस्कृतभाषा का प्राचीनतम ग्रंथ नहीं है - अपितु वह आर्य जाति की संपूर्ण ग्रंथराशि में भी प्राचीनतम ग्रंथ है। दूसरे शब्दों में, समस्त विश्ववाङ्मय का वह (ऋक्संहिता) सबसे पुरातन उपलब्ध ग्रंथ है। दस मंडलो के इस ग्रंथ का द्वितीय से सप्तम मंडल तक का अंश प्राचीनतम और प्रथम तथा दशम मंडल अपेक्षाकृत अर्वाचीन है। ऋग्वेदकाल से लेकर आज तक उस भाषा की अखंड और अविच्छिन्न परंपरा चली आ रही है। ऋक्संहिता केवल भारतीय वाङ्मय की ही अमूल्य निधि नहीं है - वह समग्र आर्यजाति की, समस्त विश्ववाङ्मय की सर्वाधिक महत्वपूर्ण विरासत है।
विश्व की प्राचीन प्रागैतिहासिक संस्कृतियों को जो अध्ययन हुआ है, उसमें कदाचित् आर्यजाति से संबद्ध अनुशीलन का विशिष्ट स्थान है। इस वैशिष्ट्य का कारण यही ऋग्वेदसंहिता है। आर्यजाति की आद्यतम निवासभूमि, उनकी संस्कृति, सभ्यता, सामाजिक जीवन आदि के विषय में अनुशीलन हुए हैं ऋक्संहिता उन सबका सर्वाधिक महत्वपूर्ण और प्रामाणिक स्रोत रहा है। पश्चिम के विद्वानों ने संस्कृत भाषा और ऋक्संहिता से परिचय पाने के कारण हो तुलनात्मक भाषाविज्ञान के अध्ययन को सही दिशा दी तथा आर्यभाषाओं के भाषाशास्त्रीय विवेचन में प्रौढ़ि एवं शास्त्रीयता का विकास हुआ। भारत के वैदिक ऋषियों और विद्वानों ने अपने वैदिक वाङ्मय को मौखिक और श्रुतिपरंपरा द्वारा प्राचीनतम रूप में अत्यंत सावधानी के साथ सुरक्षित और अधिकृत अनाए रखा। किसी प्रकार के ध्वनिपरक, मात्रापरक यहाँ तक कि स्वर (ऐक्सेंट) परक परिवर्तन से पूर्णत: बचाते रहने का नि:स्वार्थ भाव में वैदिक वेदपाठी सहस्राब्दियों तक अथक प्रयास करते रहे। "वेद" शब्द से मंत्रभाग (संहिताभाग) और "ब्राह्मण" का बोध माना जाता था। "ब्राह्मण" भाग के तीन अंश - (1) ब्राह्मण, (2) आरण्यक और (3) उपनिषद् कहे गए हैं। लिपिकला के विकास से पूर्व मौखिक परंपरा द्वारा वेदपाठियों ने इनका संरक्षण किया। बहुत सा वैदिक वाङ्मय धीरे-धीरे लुप्त हो गया है। पर आज भी जितना उपलब्ध है उसका महत्त्व असीम है। भारतीय दृष्टि से वेद को अपौरुषेय माना गया है। कहा जाता है, मंत्रद्रष्टा ऋषियों ने मंत्रों का साक्षात्कार किया। आधुनिक जगत् इसे स्वीकार नहीं करता। फिर भी यह माना जाता है कि वेदव्यास ने वैदिक मंत्रों का संकलन करते हुए संहिताओं के रूप में उन्हें प्रतिष्ठित किया। अत: संपूर्ण भारतीय संस्कृति वेदव्यास की युग-युग तक ऋणी बनी रहेगी।
इसका रचनाकाल ईसा से 5500-5200 पूर्व माना जाता है। भारतीय विद्वानों ने वेदों के रचनाकाल का आरंभ ४५०० ई.पू. से माना है परन्तु यूरोपीय विद्वान इनकी रचना का काल ईसा से २०००-११०० पूर्व मानते है।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

वेद, वेदांग, उपवेद

यहाँ साहित्य शब्द का प्रयोग "वाङ्मय" के लिए है। ऊपर वेद संहिताओं का उल्लेख हुआ है। वेद चार हैं- ऋग्वेद, यजुर्वेद, सामवेद और अथर्ववेद। इनकी अनेक शाखाएँ थीं जिनमें बहुत सी लुप्त हो चुकी हैं और कुछ सुरक्षित बच गई हैं जिनके संहिताग्रंथ हमें आज उपलब्ध हैं। इन्हीं की शाखाओं से संबद्ध ब्राह्मण, अरण्यक और उपनिषद् नामक ग्रंथों का विशाल वाङ्मय प्राप्त है। वेदांगों में सर्वप्रमुख कल्पसूत्र हैं जिनके अवांतर वर्गों के रूप में और सूत्र, गृह्यसूत्र और धर्मसूत्र (शुल्बसूत्र भी है) का भी व्यापक साहित्य बचा हुआ है। इन्हीं की व्याख्या के रूप में समयानुसार धर्मसंहिताओं और स्मृतिग्रंथों का जो प्रचुर वाङ्मय बना, मनुस्मृति का उनमें प्रमुख स्थान है। वेदांगों में शिक्षा-प्रातिशाख्य, व्याकरण, निरुक्त, ज्योतिष, छंद शास्त्र से संबद्ध ग्रंथों का वैदिकोत्तर काल से निर्माण होता रहा है। अब तक इन सबका विशाल साहित्य उपलब्ध है। आज ज्योतिष की तीन शाखाएँ-गणित, सिद्धांत और फलित विकसित हो चुकी हैं और भारतीय गणितज्ञों की विश्व की बहुत सी मौलिक देन हैं। पाणिनि और उनसे पूर्वकालीन तथा परवर्ती वैयाकरणों द्वारा जाने कितने व्याकरणों की रचना हुई जिनमें पाणिनि का व्याकरण-संप्रदाय 2500 वर्षों से प्रतिष्ठित माना गया और आज विश्व भर में उसकी महिमा मान्य हो चुकी है। पाणिनीय व्याकरण को त्रिमुनि व्याकरण भी कहते हैं, क्योंकि पाणिनि, कात्यायन और पतंजलि इन तीन मुनियों के सत्प्रयास से यह व्याकरण पूर्णता को प्राप्त किया। यास्क का निरुक्त पाणिनि से पूर्वकाल का ग्रंथ है और उससे भी पहले निरुक्तिविद्या के अनेक आचार्य प्रसिद्ध हो चुके थे। शिक्षाप्रातिशाख्य ग्रंथों में कदाचित् ध्वनिविज्ञान, शास्त्र आदि का जितना प्राचीन और वैज्ञानिक विवेचन भारत की संस्कृत भाषा में हुआ है- वह अतुलनीय और आश्चर्यकारी है। उपवेद के रूप में चिकित्साविज्ञान के रूप में आयुर्वेद विद्या का वैदिकाल से ही प्रचार था और उसके पंडिताग्रंथ (चरकसंहिता, सुश्रुतसंहिता, भेडसंहिता आदि) प्राचीन भारतीय मनीषा के वैज्ञानिक अध्ययन की विस्मयकारी निधि है। इस विद्या के भी विशाल वाङ्मय का कालांतर में निर्माण हुआ। इसी प्रकार धनुर्वेद और राजनीति, गांधर्ववेद आदि को उपवेद कहा गया है तथा इनके विषय को लेकर ग्रंथ के रूप में अथवा प्रसंगतिर्गत सन्दर्भों में पर्याप्त विचार मिलता है।[13,14,15]

दर्शनशास्त्र

वेद, वेदांग, उपवेद आदि के अतिरिक्त संस्कृत वाङ्मय में दर्शनशास्त्र का वाङ्मय भी अत्यंत विशाल है। पूर्वमीमांसा, उत्तर मीमांसा, सांख्य, योग, वैशेषिक और न्याय-इन छह प्रमुख आस्तिक दर्शनों के अतिरिक्त पचासों से अधिक आस्तिक-नास्तिक दर्शनों के नाम तथा उनके वाङ्मय उपलब्ध हैं जिनमें आत्मा, परमात्मा, जीवन, जगत्पदार्थमीमांसा, तत्वमीमांसा आदि के सन्दर्भ में अत्यंत प्रौढ़ विचार हुआ है। आस्तिक षड्दर्शनों के प्रवर्तक आचार्यों के रूप में व्यास, जैमिनि, कपिल, पतंजि, कणाद, गौतम आदि के नाम संस्कृत साहित्य में अमर हैं। अन्य आस्तिक दर्शनों में शैव, वैष्णव, तांत्रिक आदि सैकड़ों दर्शन आते हैं। आस्तिकेतर दर्शनों में बौद्धदर्शनों, जैनदर्शनों आदि के संस्कृत ग्रंथ बड़े ही प्रौढ़ और मौलिक हैं। इनमें गंभीर विवेचन हुआ है तथा उनकी विपुल ग्रंथराशि आज भी उपलब्ध है। चार्वाक, लोकायतिक, गार्हपत्य आदि नास्तिक दर्शनों का उल्लेख भी मिलता है। वेदप्रामण्य को माननेवाले आस्तिक और तदितर नास्तिक के आचार्यों और मनीषियों ने अत्यंत प्रचुर मात्रा में दार्शनिक वाङ्मय का निर्माण किया है। दर्शन सूत्र के टीकाकार के रूप में परमादृत शंकराचार्य का नाम संस्कृत साहित्य में अमर है।

लौकिक साहित्य

कौटिल्य का अर्थशास्त्र, वात्स्यायन का कामसूत्र, भरत का नाट्यशास्त्र आदि संस्कृत के कुछ ऐसे अमूल्य ग्रंथरत्न हैं - जिनका समस्त संसार के प्राचीन वाङ्मय में स्थान है।

वैदिक वाङ्मय के अनंतर सांस्कृतिक दृष्टि से वाल्मीकि के रामायण और व्यास के महाभारत की भारत में सर्वोच्च प्रतिष्ठा मानी गई है। महाभारत का आज उपलब्ध स्वरूप एक लाख पद्यों का है। प्राचीन भारत की पौराणिक गाथाओं, समाजशास्त्रीय मान्यताओं, दार्शनिक आध्यात्मिक दृष्टियों, मिथकों, भारतीय ऐतिहासिक जीवनचित्रों आदि के साथ-साथ पौराणिक इतिहास, भूगोल और परंपरा का महाभारत महाकोश है। वाल्मीकि रामायण आद्य लौकिक महाकाव्य है। उसकी गणना आज भी विश्व के उच्चतम काव्यों में की जाती है। इनके अतिरिक्त अष्टादश पुराणों और उपपुराणादिकों का महाविशाल वाङ्मय है जिनमें पौराणिक या मिथकीय पद्धति से केवल आर्यों का ही नहीं, भारत की समस्त जनता और जातियों का सांस्कृति इतिहास अनुबद्ध है। इन पुराणकार मनीषियों ने भारत और भारत के बाहर से आयात सांस्कृति एवं आध्यात्मिक ऐक्य की प्रतिष्ठा का सहस्राब्दियों तक सफल प्रयास करते हुए भारतीय सांस्कृति को एकसूत्रता में आबद्ध किया है।

संस्कृत के लोकसाहित्य के आदिकवि वाल्मीकि के बाद गद्य-पद्य के लाखों श्रव्यकाव्यों और दृश्यकाव्यरूप नाटकों की रचना होती चली जिनमें अधिकांश लुप्त या नष्ट हो गए। पर जो स्वल्पांश आज उपलब्ध है, सारा विश्व उसका महत्त्व स्वीकार करता है। कवि कालिदास के अभिज्ञानशाकुन्तलम् नाटक को विश्व के सर्वश्रेष्ठ नाटकों में स्थान प्राप्त है। अश्वघोष, भास, भवभूति, बाणभट्ट, भारवि, माघ, श्रीहर्ष, शूद्रक, विशाखदत्त आदि कवि और नाटककारों को अपने अपने क्षेत्रों में अत्यंत उच्च स्थान प्राप्त है। सर्जनात्मक नाटकों के विचार से भी भारत का नाटक साहित्य अत्यंत संपन्न और महत्वशाली है। साहित्यशास्त्रीय समालोचन पद्धति के विचार से नाट्यशास्त्र और साहित्यशास्त्र के अत्यंत प्रौढ़, विवेचनपूर्ण और मौलिक प्रचुरसंख्यक कृतियों का संस्कृत में निर्माण हुआ है। सिद्धांत की दृष्टि से रसवाद और ध्वनिवाद के विचारों को मौलिक और अत्यंत व्यापक चिंतन माना जाता है।[16,17,18] स्तोत्र, नीति और सुभाषित के भी अनेक उच्च कोटि के ग्रंथ हैं। इनके अतिरिक्त शिल्प,

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

कला, संगीत, नृत्य आदि उन सभी विषयों के प्रौढ़ ग्रंथ संस्कृत भाषा के माध्यम से निर्मित हुए हैं जिनका किसी भी प्रकार से आदिमध्यकालीन भारतीय जीवन में किसी पक्ष के साथ संबंध रहा है। ऐसा समझा जाता है कि द्यूतविद्या, चौरविद्या आदि जैसे विषयों पर ग्रंथ बनाना भी संस्कृत पंडितों ने नहीं छोड़ा था। एक बात और थी। भारतीय लोकजीवन में संस्कृत की ऐसी शास्त्रीय प्रतिष्ठा रही है कि ग्रंथों की मान्यता के लिए संस्कृत में रचना को आवश्यक माना जाता था। इसी कारण बौद्धों और जैनों, के दर्शन, धर्मसिद्धान्त, पुराणगाथा आदि नाना पक्षों के हजारों ग्रंथों को पालि या प्राकृत में ही नहीं संस्कृत में सप्रयास रचना हुई है। संस्कृत विद्या की न जाने कितनी महत्वपूर्ण शाखाओं का यहाँ उल्लख भी अल्पस्थानता के कारण नहीं किया जा सकता है। परंतु निष्कर्ष रूप से पूर्ण विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि भारत की प्राचीन संस्कृत भाषा-अत्यंत समर्थ, संपन्न और ऐतिहासिक महत्त्व की भाषा है। इस प्राचीन वाणी का वाङ्मय भी अत्यंत व्यापक, सर्वतोमुखी, मानवतावादी तथा परमसंपन्न रहा है। विश्व की भाषा और साहित्य में संस्कृत भाषा और साहित्य का स्थान अत्यंत महत्वशाली है। समस्त विश्व के प्रच्यविद्याप्रेमियों ने संस्कृत को जो प्रतिष्ठा और उच्चासन दिया है, उसके लिए भारत के संस्कृतप्रेमी सदा कृतज्ञ बने रहेंगे।

प्रसिद्ध साहित्यिक रचनाएँ

साहित्यकार	प्रसिद्ध कृति	रचनाकाल
भरत मुनि	नाट्यशास्त्रम्	प्रथम शती
भामह	काव्यालंकार	सप्तम शतक
दण्डी	काव्यादर्श	सप्तम शती
उद्भट	काव्यालंकारसारसंग्रह	अष्ठम शती
वामन	काव्यालंकारसूत्रवृत्ति	अष्ठम शती
रुद्रट	काव्यालंकार	नवम शती
आनन्दवर्धन	ध्वन्यालोक	नवम शती
राजशेखर	काव्यमीमांसा	दशम शती
भट्टनायक	हृदयदर्पण	दशम शती
अभिनवगुप्त	अभिनवभारती,लोचनं च	दशम शती

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

धनंजय	दशरूपकम्	दशम शती
भोज	सरस्वतीकण्ठाभरणम्,शृंगारप्रकाश	एकादश शती
महिमभट्ट	व्यक्तिविवेक	एकादश शती
क्षेमेन्द्र	औचित्यविचारचर्चा	एकादश शती
मम्मट	काव्यप्रकाश	एकादश शती
रुय्यक	अलंकारसर्वस्वम्	द्वादश शती
हेमचन्द्र	काव्यानुशासनम्	द्वादश शती
जयदेव	चन्द्रालोक	त्रयोदश शती
विद्यानाथ	एकावली	त्रयोदश शती
विद्यानाथ	प्रतापरुद्रीयम्	त्रयोदश शती
विश्वनाथ	साहित्यदर्पण	त्रयोदश शती
केशवमिश्र	अलंकारशेखर	षोडश शती
अप्पयदीक्षित	कुवलयानन्द तथा चित्रमीमांसा	षोडश शती
जगन्नाथ	रसगंगाधर	सप्तदश शती
चूडामणिदीक्षित	काव्यदर्पण	सप्तदश शती

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

संस्कृत साहित्य की विशेषताएँ

संस्कृत साहित्य की महानता को प्रसिद्ध भारतविद जुआन मस्कारो (Juan Mascaro) ने इन शब्दों में वर्णन किया है:

> Sanskrit literature is a great literature. We have the great songs of the Vedas, the splendor of the Upanishds, the glory of the Bhagvat-Gita, the vastness (100,000 verses) of the Mahabaharat, the tenderness and the heroism found in the Ramayana, the wisdom of the fables and stories of India, the scientific philosophy of Sankhya, the psychological philosophy of Vedanta, the Laws of Manu, the grammar of Panini and other scientific writings, the lyrical poetry, and dramas of Kalidas. Sanskrit literature, on the whole, is a romantic interwoven with idealism and practical wisdom, and with a passionate longing for spiritual vision.

संस्कृत साहित्य की मुख्य विशेषताएँ इस प्रकार है:

अति विस्तृत रचना-काल

संस्कृत साहित्य की रचना अति प्राचीन काल (हजारों वर्ष ईसापूर्व) से लेकर अब तक निरन्तर चली आ रही है।

अति-विस्तृत क्षेत्र[18,19,20]

संस्कृत साहित्य की रचना भारत और भारत से बाहर के देशों में हुई है। जो पाण्डुलिपियाँ प्राप्त हुई हैं वे ऊतर-से दक्षिण और पूर्व-से-पश्चिम तक कई हजार किमी के विस्तृत क्षेत्र से हैं।

विशालता (abundance and vastness)

संस्कृत साहित्य इतना विशाल और विविधतापूर्ण है कि 'संस्कृत में क्या-क्या है?' - यह पूछने के बजाय प्रायः पूछा जाता है कि 'संस्कृते किं नास्ति?' (संस्कृत में क्या नहीं है?)। अनुमान है कि संस्कृत की पाण्डुलिपियों की कुल संख्या ३ करोड़ से भी अधिक होगी, यह संख्या ग्रीक और लैटिन पाण्डुलिपियों की सम्मिलित संख्या से सौ गुना से अधिक है।[1] यह इतनी अधिक है कि बहुत सी पाण्डुलिपियाँ अभी तक सूचीबद्ध नहीं की सकी है, उन्हे पढ़ना और उनका अनुवाद आदि करना बहुत दूर की बात है।[2]

विविधता (variety and diversity)

संस्कृत साहित्य की विविधता आश्चर्यचकित करने वाली है। इसमें धर्म और दर्शन, नाटक, कथा, काव्य आदि तो हैं ही, इसमें गणित, खगोलशास्त्र, आयुर्वेद, रसायन विज्ञान, रसशास्त्र, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, शिल्प, कृषि आदि में रचित ग्रन्थों की संख्या कई लाख है। इसी तरह व्याकरण, काव्यशास्त्र, भाषाविज्ञान, संगीत, कोश, कला, राजनीति, समाजशास्त्र, नीतिशास्त्र, कामशास्त्र, सुभाषित के भी असंख्य ग्रन्थ हैं।

सातत्य

प्राप्त पाण्डुलिपियों से स्वयं स्पष्ट है कि भारतीय महाखण्ड पर इतने सारे दैवी एवं मानवी आपदाओं (विदेशी आक्रमणों) के बावजूद हर कालखण्ड में संस्कृत साहित्य की रचना निर्बाध होती रही।

प्रगतिशीलता

संस्कृत साहित्य अत्यन्त प्रगत साहित्य है। उसमें सदा आगे बढ़ने और नयी उंचाइयाँ छूने की प्रवृत्ति है। उसमें सबसे प्राचीन व्याकरण ग्रन्थ है, सबसे प्राचीन शब्दकोश है, सबसे प्राचीन भाषावैज्ञानिक चिन्तन है। उसमें प्राचीनतम दर्शन है, तर्कशास्त्र है, गणित है, चिकित्साशास्त्र है, विधिशास्त्र है। उसमें नीति और धर्म का जो चिन्तन हुआ है वह उच्च कोटि का है। दर्शन को ही लें तो उसमें अनीश्वरवाद सहित विविध मतमतान्तरों का समावेश है। उसमें शास्त्रार्थ करने और ग्रन्थों के भाष्य लिखने तथा आवश्यक होने पर खण्डन तक करने की प्रवृत्ति पायी जाती है।[21,22,23]

मौलिकता (originality)

किसी दूसरी भाषा से अनूदित संस्कृत के ग्रन्थों की संख्या नहीं के बराबर है। इसके विपरीत संस्कृत के ग्रन्थों का विश्व भर में आदर था/है जिसके कारण अनेकों संस्कृत ग्रन्थों का अरबी, फारसी, तिब्बती, चीनी आदि में अनुवाद हुआ। हाँ संस्कृत के किसी ग्रन्थ पर अन्य लोगों द्वारा संस्कृत में ही टीका ग्रन्थ (भाष्य) लिखने की परम्परा अवश्य रही है।

गम्भीरता (depth)

सभी विधाओं के ग्रन्थों में लिये गये विषय का चिन्तन अत्यन्त गहराई तक हुआ है, चाहे वह साहित्यशास्त्र हो, व्याकरण हो, आयुर्वेद हो या नीतिशास्त्र या कामशास्त्र।

| ISSN: 2395-7852 | www.ijarasem.com | Impact Factor: 5.454| Bimonthly, Peer Reviewed & Referred Journal |

| Volume 6, Issue 5, September 2019 |

उत्कृष्टता (excellence)

आज के युग के वैज्ञानिको ने भी यह माना हे कि नई पीढ़ी के कम्प्यूटर के लिये संस्कृत ही सर्वोतम भाषा हे।[

वैज्ञानिकता

संस्कृत साहित्य अधिकांशतः अधार्मिक (या सेक्युलर) प्रकृति का है जिसे आज के युग के हिसाब से भी वैज्ञानिक कहा जा सकता है। उसमें गणित है, खगोलविज्ञान है, आयुर्विज्ञान (मेडिसिन) है, भाषाविज्ञान है, तर्कशास्त्र है, दर्शनशास्त्र है, रसशास्त्र (रसायन) है। गणित में भी केवल अंकगणित ही नहीं है, ज्यामिति भी है, ठोस ज्यामिति भी, बीजगणित (अल्जेब्रा) भी, त्रिकोणमिति भी और कैलकुलस भी।

पन्थनिरपेक्षता[24]

इतना प्राचीन होने के बावजूद संस्कृत साहित्य का अधिकांश भाग सेक्युलर तथा अधार्मिक (non-religious) है।[1]

प्रतिक्रिया दें संदर्भ

1. पाणिनी, सरोजा भाटे, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली, 2002
2. संस्कृत साहित्य का एक साथी, एससी बनर्जी, एमएलबीडी, नई दिल्ली, 1989, पृष्ठ 677-768 देखें
3. अमरकोश, 1.9.3 एवं 4; नमलिंगानुशासनम्, केजी ओका द्वारा संपादित, पूना, 1913
4. पाणिनिया शिक्षा, 16; पाणिनीय शिक्षा, नारायण मिश्र द्वारा संपादित, वाराणसी, (1978)
5. https://quoteinvestigator.com/2013/09/15/saw-elba/
6. सूर्यकवि का रामकृष्ण-विलोमकाव्यम्, 1; रामकृष्ण विलोमकाव्यम्, दैवज्ञ सूर्यकवि, कामेश्वर नाथ मिश्र द्वारा संपादित और अनुवादित, वाराणसी, 1970
7. वेदांत देशिकन का पादुका सहस्राम , 929 और 930; श्री आर. केशव अयंगर और श्री डी. रामास्वामी अयंगर द्वारा लिखित श्री वेदांत देसिका (दो खंडों का सेट) का श्री पादुका सहस्राम, कुप्पू सावमी शास्त्री अनुसंधान संस्थान, चेन्नई, 2017
8. भर्तृहरि नीतिशतकम्, 19
9. श्री अरबिंदो द्वारा अनुवाद, सीडब्ल्यूएसए खंड 5, पृष्ठ 322
10. --https://vedicheritage.gov.in/samhitas/samaveda-samhitas/
11. https://www. Indianculture.gov.in/rarebooks/classical-sanskrit-literature
12. https://ignca.gov.in/PDF_data/A_glimpse_VEDIC_LITERATURE.pdf
13. https://www.britannica.com/summary/Indo-Aryan-भाषाएँ
14. https://www.telegraphindia.com/india/origin-of-indo-european-lengths-date-back-to-about-8100-years-ago-says-study/cid/1955001
15. https://www.worldhistory.org/Indo-European_भाषाएँ
16. विज्ञान की भाषा के रूप में संस्कृत: इतिहास और आधुनिक समय में इसकी भूमिका | इंडिया न्यूज़ - टाइम्स ऑफ़ इंडिया (indiatimes.com)
17. संस्कृत - विश्व इतिहास विश्वकोश
18. संस्कृत - नई दुनिया विश्वकोश
19. (13)संस्कृत भाषा का महत्व | डॉ. एनसी पांडा - Academia.edu
20. संस्कृत - क्या यह आज प्रासंगिक है? - ऋषिहुड यूनिवर्सिटी, दिल्ली एनसीआर
21. संस्कृत के बारे में
22. संस्कृत का पुनरुद्धार - द स्टेट्समैन
23. संस्कृत शिक्षा: परंपरा के आगे सिर झुकाना? (outlookindia.com)
24. जीवन जीने का भविष्य संस्कृत (swarajyamag.com)